धरती १३

'शलभ' श्रीराम सिंह केन्द्रित अंक

धरती-१३

सामाजिक एवं वैज्ञानिक साहित्य का
अनियतकालिक एवं अव्यवसायिक आयोजन

सम्पादक
शैलेन्द्र चौहान

सम्पादक

शैलेन्द्र चौहान

सम्पर्क :

३४/२४२, प्रतापनगर, सेक्टर - ३, जयपुर ३०२०३३ (राजस्थान)

ई मेल :

dharati_aniyatkalik@webdunia.com

आवरण :

गोपाल नायडू

मुद्रक :

कमल ग्राफिक्स, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

प्रकाशन/प्रबन्ध/स्वामित्व :

मीना सिंह

४०२, रॉयल ब्लाक, साकार रेसीडेन्सी, ए.बी. रोड, इन्दौर - ४५२०११

सहयोग :

बीस रुपये मात्र

सम्पादकीय

संप्रेषण

शलभ जी पर **'धरती'** का अंक निकालने को महज सद्इच्छा ही कहा जा सकता है । बाकी कुछ कहना न उतना आवश्यक है न ही प्रासंगिक । इस अंक में समेटे गये लेख, संस्मरण, विश्लेषण और समीक्षाएं सब मुझे बोलते-बतियाते, बतकही करते और बेलाग रिमार्क देते लगे, अत: यही उनकी जीवंतता और सच्चाई का मानदण्ड जैसा प्रतीत हुआ । अलीक, अभिज्ञात, राधिका प्रसाद त्रिपाठी, बृज, विद्याधर शुक्ल, केशव और रामनिहाल गुंजन सभी पूरी तरह मुखर भी हैं और बेबाक भी । अब इससे आगे मुझे क्या कहना है ? हाँ शलभ जी के बारे में मेरी निजी पसंद-नापसंद की उतनी खास अहमियत भी नहीं है । मैं उनसे कुल जमा चार बार ही मिला होऊँगा । उस मिलने में कुछ भी अ-सामान्य नहीं था जैसा कि अन्यों का अनुभव रहा । हाँ **'निगाह दर निगाह'** वाली पुस्तक की समीक्षा **'लेखन'** में छपी तब मजाक में उन्होंने विद्याधर जी को कहा 'शैलेन्द्र को पता नहीं है मेरे आदमी चारों तरफ हैं, मैं चाकू मारकर रहूँगा' और फिर बोले 'अपने ही अपनों को मारते हैं ।' बहरहाल यह प्रसंग इसलिए कि हम न जानते हुए भी काफी कुछ एक दूसरे को जानते थे ।

उनकी कुछ कविताएं मुझे बेहद पसंद हैं, वे मैने इस अंक में देने की कोशिश की है। बाकी कविताएं मेरी नजर में उतनी अच्छी नहीं जैसा किउनके साथी/मित्र बताते हैं। फिर भी सबकी अपनी सोच है और सीमाएं भी ।

यह अंक बहुत विलंबित हुआ । मेरी काहिली और स्थानांतरण की परेशानियों के चलते । पर अब इसे आपके सामने लाने में मुझे अतीव प्रसन्नता महसूस हो रही है, उम्मीद है आपकी प्रतीक्षा को भी एक विराम मिलेगा । उन्हीं के शब्दों में -

नफ़स-नफ़स, कदम-कदम
बस एक फिक्र दम ब दम
घिरे हैं हम सवाल से
जवाब चाहिए

- शैलेन्द्र चौहान

सम्पर्क - **शैलेन्द्र चौहान**, 094276 13104-(मोबाईल)

इस अंक में

कविताएं

	पृष्ठ क्र.
नयी धरती का गीत	7
दिल्लियाँ	8
एक दिन	9
एक दुनिया समानान्तर	10
हमारी धरती कहाँ है ?	11
सिक्कों से लड़ा जाने वाला युद्ध	12
सम्पादक की खैर नहीं	13
सहसा	14
अनपेक्षित स्थिति का गीत	15
आदमी की खोपड़ी	16
बीत जायें हम ?	19
सुर्ख आँचल एक	20
राग-बोध	21
सुबह	22
प्यार	23
छूट जायेगा नगर यह	24
घर का रास्ता भूल गया मैं	25
रास्ता है	26
देश	27
नफ़स-नफ़स कदम-कदम	28

लेख		पृष्ठ क्र.
कविता के अकाल में शलभ	विद्याधर शुक्ल	30
चेतना के नव संस्कार की कविताएं	विजय बहादुर सिंह	39
भविष्य के खतरों से आगाह करता कवि : शलभ	जयनारायण	47
शीर्षकों के खिलाफ एक शीर्षक	एस० आनंद	49
'शलभ' का काव्य : अलिखित ऋचाओं.......	राधिका प्रसाद त्रिपाठी	52
हरावल दस्ते का कवि	केशव	58
शलभ, विदिशा और -------कविता	बृज श्रीवास्तव	60
अग्रज कवि शलभ का सच से भरा संघर्ष	अलीक	63
भूलने वाले तुझे क्या याद भी आता हूँ मैं	अभिज्ञात	68
शलभ श्रीराम सिंह : कुछ पत्र कुछ रचना-प्रसंग	रामनिहाल गुंजन	79
जीवन के भूल-भुलैयों में अपनत्व की तलाश	राधेलाल बिजधावने	83
राहे हयात : जनवादी गज़ल के नये आयाम	जानकी प्रसाद शर्मा	89
आत्म निरिक्षण की कविता	डॉ. शैलेन्द्रकुमार त्रिपाठी	99
निगाह दर निगाह : औरत, कुदरत और बगावत	शैलेन्द्र चौहान	107

प्रतिक्रिया

कुरूप समय की उर्वर ''धरती''		111